RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 25 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 2 सितम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत्
1960853119 दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक
शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 25, 30 अगस्त–2 सितम्बर 2018 तदनुसार 17 भद्रपद, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

वैदिक राष्ट्र

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषुव्यो-ऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।२२।।

–अथर्व० २२।२२

शब्दार्थ–हे **ब्रह्मन्** = सर्वतो महान् भगवन्! **राष्ट्रे** = राष्ट्र में **ब्रह्मवर्चसी** = ब्रह्मतेज से युक्त **ब्राह्मणः** = ब्राह्मण, ब्रह्मवेत्ता **आ+जायताम्** = उत्पन्न हो। **शूरः** = शूर **इषुव्यः** = इषु = शस्त्रास्त्र चलाने में कुशल **अतिव्याधी** = अत्यन्त उद्विग्न करने वाला **महारथः** = महारथी **राजन्यः** = राष्ट्रहितकारी क्षत्रिय **आ+जायताम्** = उत्पन्न हो **दोग्ध्री** = दूध देने वाली **धेनुः** = गौ, **वोढा** = भार उठाने वाला **अनड्वान्** = बैल, रथ ले-जाने वाला **आशुः** = शीघ्रगामी **सप्तिः** = घोड़ा, **पुरन्धिः** = अतिबुद्धिमती, नगरधारिका **योषा** = स्त्री और **अस्य** = इस **यजमानस्य** = यजमान का **जिष्णुः** = जयशील **रथेष्ठाः** = रथारूढ़ **सभेयः** = सभ्य, सभी-सञ्चालन में चतुर, सभा का भला करने वाला **युवा** = युवा, जवान **वीरः** = वीर सन्तान **जायताम्** = उत्पन्न हो। **नः** = हमारी **निकामे-निकामे** = इच्छाओं के अनुसार **पर्जन्यः** = बादल **वर्षतु** = बरसे **नः** = हमारी **ओषधयः** = ओषधियाँ **फलवत्यः** = फलवाली होकर **पच्यन्ताम्** = पके **नः** = हमारा **योगक्षेमः** = योगक्षेम **कल्पताम्** = समर्थ हो, सिद्ध हो।

व्याख्या–जिन-जिन पदार्थों से एक राष्ट्र समृद्ध हो सकता है, उनका अत्यन्त स्पष्ट निरूपण इस मन्त्र में हुआ है। कोई राष्ट्र समृद्ध नहीं हो सकता, जिसमें ब्राह्मण न हों, ब्रह्मवेत्ता न हों, सकल विद्याओं की शिक्षा देने वाले महाचार्य न हों। वह राष्ट्र तो अज्ञानान्धकार में फँसकर अपना स्वातन्त्र्य नष्ट कर बैठेगा, जिसमें सकल कलाकलाप के आलाप करने वाले महाविद्वान् न हों, अतः राष्ट्रहितचिन्तकों का यह प्रथम कर्त्तव्य है कि वे यत्न करके अपने राष्ट्र में बड़े-बड़े प्रामाणिक विद्वानों को बसाएँ, ताकि 'विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश' सदा होता रहे। नित्य नये-नये आविष्कारों से राष्ट्र की श्रीवृद्धि होती रहे, किन्तु केवल विद्याव्यसनी ब्राह्मणों से ही राष्ट्र का सञ्चालन नहीं हो सकता। राष्ट्ररक्षा के लिए बुद्धिबल के साथ बाहुबल (युद्धबल) भी चाहिए। चाहे कहा किसी और प्रसङ्ग में है किन्तु सनत्कुमार ने कहा ठीक है कि-**बलं वार विज्ञानाद् भूयः, अपि ह शतं विज्ञानवतोमेको बलवानाकम्पयते**' (छां० ७।८।१) = बल विज्ञान से बढ़कर है, एक बलवान् सैंकड़ों विज्ञानियों को कँपा देता है।

अतः ब्राह्मणों के साथ योद्धाओं का भी आंकलन करें। योद्धा नाममात्र के ही न हों, वरन् वे शस्त्रास्त्र-व्यवहार में निपुण, शत्रु को कँपा देने वाले महारथ और शूरवीर हों। देश में दुधारू गौओं की भरमार हो, घोड़े, बैल, यातायात के समस्त साधन हों। स्त्रियाँ बुद्धिमती, नागरी एवं आवश्यकता पड़ने पर नगर तथा राष्ट्र का प्रबन्ध करने में समर्थ हों। सन्तान बलवान्, साधनवान् हो। अतिवृष्टि और उनके कारण होने वाले दुर्भिक्ष भी न हों। जब हम चाहें, तभी वृष्टि हो जाए। आजीविका कमाने में कोई बाधा न हो, कमाई सफल तथा सुरक्षित हो। धनधान्य की त्रुटि न हो। समय पर सभी सस्य पकें।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे।।

–यजु० ३६.२१

भावार्थ–हे सकल ऐश्वर्ययुक्त समर्थ प्रभो! आप विशेष प्रकाशस्वरूप और किसी से भी न दबने वाले महातेजस्वी हो, आपको हमारा नमस्कार हो। आप शब्द करने वाले अर्थात् वेदवाणी के दाता हो, आप सदा आनन्द में रहते हो अपने प्रेमी भक्तों को सदा आनन्द में रखते हो। आपकी जो-जो चेष्टाएँ हैं वे सबको आनन्द देने के लिए ही हैं। अतएव हम आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

–यजु० ३६.२२

भावार्थ–हे दयामय परमात्मन्! जिस-जिस स्थान से वा कारण से आप कुछ चेष्टा करो, उस-उससे हमें निर्भय करो। हमारी सब प्रजाओं को और हमें शान्ति प्रदान करो। संसार भर की सब प्रजाएँ आपस में प्रीतिपूर्वक बर्ताव करती हुई सुखपूर्वक रहें और अपने जन्म को सफल करें। आपका उपदेश है कि आपस में लड़ना-झगड़ना कोई बुद्धिमत्ता नहीं, एक दूसरे से प्रेमपूर्वक रहना, मिलना-जुलना यही सुखदायक है। अतएव आप प्रभु से प्रार्थना है कि, हे दयामय! हम सबको शान्ति प्रदान करो और हमारे गौ अश्वादि उपकारक पशुओं को भी अभय प्रदान करो।

अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

–यजु० ११.८३

भावार्थ–हे अन्नादि उत्तम पदार्थों के स्वामिन्! आप कृपा करके रोगनाशक और बल-वर्धक अन्न हमको दो और अन्नदाता पुरुष का उद्धार करो। हमारे दो पगवाले गौ अश्वादि पशु, जो सदा हम पर उपकार कर रहे हैं, जिनका जीवन ही परोपकार के लिए हैं, इन में भी पराक्रम धारण कराओ।

भारतीय संस्कृति और युवा मानसिकता

ले.-डा. निर्मल कौशिक 163, आदर्श नगर ओल्ड कैंट रोड फरीदकोट (पंजाब)

युवावस्था शैशव और प्रौढ़ावस्था के मध्य की कड़ी है। शैशवावस्था में बच्चा माता-पिता और गुरू के संरक्षण में अपना समय बिताता है। मगर युवावस्था में कदम रखते ही वह अपना विवेक और अहं दूसरों से बड़ा समझने लगता है। इसी कारण वह कई गलत निर्णय भी ले लेता है। जवानी का अपना एक नशा होता है। जैसे नशे में धुत्त आदमी को अपना मार्ग स्पष्ट नहीं सूझता है, ठीक उसी प्रकार जवानी के नशे में भी जीवन रूपी मार्ग स्पष्ट नहीं सूझता और व्यक्ति पथ भ्रमित हो जाता है। शायद इसीलिए कहा जाता है कि 'जवानी अन्धी होती है।' जैसे अंधे की लाठी पकड़ कर कोई उसे किधर भी ले जाए। वह आश्वस्त होकर पीछे-पीछे चलता रहता है। यह उसे ले जाने वाले पर निर्भर करता है कि वह उसे पथ-बाधाओं से बचाकर उसकी मंज़िल तक पहुंचाता है या फिर लूटमार करके उसे गर्त्त में धकेल देता है। युवा वर्ग को पथ भ्रमित होने से बचाने हेतु हमें अनुकूल परिवेश और अच्छे संस्कार प्रदान करने होंगे। घर का सात्विक वातावरण ही उसे अच्छे संस्कार दे सकता है। परन्तु सच्चाई तो यह है कि आज के आधुनिक माता-पिता के पास बच्चों को संस्कार के नाम पर देने के लिए कुछ है ही नहीं। संस्कार तो वही माता-पिता दे सकते हैं जो स्वयं सुसंस्कृत हों। युग की बहती धारा में बह जाने वाले लोग अपनी सन्तान को सुसंस्कृत नहीं बना सकते। इसके लिए अपनी मौलिक मान्यताओं के प्रति दृढ़ संकल्प होना बहुत ज़रूरी है। 'यदि धारा के विपरीत चलने की क्षमता न हो तो कम से कम दृढ़ता से अपने स्थान पर खड़े रहने का साहस तो व्यक्ति में होना ही चाहिए।'

आज हम युवा वर्ग को अनुशासनहीन और उच्छृंखल बता कर उस पर नैतिक रूप से पतनोन्मुख हो जाने का लांछन लगा रहे हैं ताकि हम स्वयं इस दोष से मुक्त हो सकें। यह जानते हुए भी कि पौधा खाद-पानी से ही फलता-फूलता है। समाज एक अखण्ड इकाई है फिर युवा वर्ग अकेला इस नैतिक पतन के लिए दोषी कैसे हो सकता है ? समाज में परिव्याप्त प्रत्येक कुरीति के लिए हम बराबर के हिस्सेदार हैं। क्या भ्रष्टाचार एवं दहेज प्रथा जैसी सामाजिक विसंगतियां आसमान से उतरी हैं ? हम यह क्यों भूल रहे हैं कि 'नींव' के बिना भवन का निर्माण संभव नहीं है। स्पष्ट ही है कि युवा वर्ग के इस पतनोन्मुखी नैतिक स्तर के लिए हम सब समान रूप से जिम्मेदार हैं। कच्ची मिट्टी से बने टेढ़े-आढ़े बर्तन के लिए कुम्हार ही जिम्मेदार होता है मिट्टी नहीं।

आज की सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं के तथाकथित नेता अथवा कर्णधार राष्ट्रभाषा, देशप्रेम व सामाजिक प्रगति का षड्यंत्र रचकर भारतीय नैतिक मूल्यों और मान्यताओं की गहरी कब्र खोद रहे हैं। आज हम बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों में पढ़ाकर यही प्रभाव दे रहे हैं कि भारत देश की अपनी कोई भाषा ही नहीं है। उधार की भाषा के माध्यम से शिक्षा पाने वाली इस पीढ़ी का भविष्य क्या होगा ? इसके दुष्परिणाम कुछ हद तक तो हमें अभी से मिलने शुरू हो गए हैं। बच्चों को न अंग्रेज़ी आती है न हिन्दी।

भारतीय संस्कृति का मूलाधार नैतिकता है। नैतिकता से ही आदर्श जीवन की परिकल्पना की जा सकती है। अगर हमें युवा पीढ़ी को पतनोन्मुखी नैतिक स्तर से उबारना है तो सबसे पहले नैतिकता का अर्थ समझना होगा। नैतिकता वास्तव में व्यवहार की वह नीति है जिससे अपना कल्याण हो और किसी दूसरे को कोई बाधा या हानि न हो। व्यवहार के लिए शुभ, कल्याणकारी एवं अच्छाई का संकल्प ही समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अत: नैतिकता का अभिप्राय दुर्गुणों से बचा कर सद्गुणों की ओर प्रेरित करना है। नैतिकता मनुष्य के आचार-व्यवहार को संयमित एवं सुनियोजित बनाती है जिससे मानव श्रेष्ठतर मानव कहलाता है।

इन्हीं नैतिक मानदंडों के अभाव में आज का युवा वर्ग भटक गया है। वैज्ञानिक प्रगति ने जीवन की अवस्थाओं के प्रति हमें सशंकित कर दिया है। फलस्वरूप मानव मूल्यों का विघटन हो रहा है। भौतिकवाद की ओर बढ़ती अभिरुचि ने अध्यात्मवाद से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया है। पारस्परिक संबंधों में टकराव और तनाव की स्थिति है। युवा वर्ग को चाहिए कि इस टकराव, तनाव और भटकाव से बचने के लिए और समाज को विनाश के गर्त में गिरने से बचाने के लिए भारतीय नैतिक मान्यताओं को अपने जीवन में अपनाएं जिसके प्रत्येक शब्द में समग्र मानवता के कल्याण की मंगल कामना की गई है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्

अर्थात् सभी प्राणी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी कल्याण को देखें। कोई भी दु:खी न हो।

भारतीय नैतिक मानदंडों को जानने के लिए सबसे पहले हमें भारतीय संस्कृति की पहचान करनी होगी। भारतीय संस्कृति कोई पत्थर की प्रतिमा नहीं है, जिसकी केवल पूजा अर्चना करने से ही हम चमत्कारिक रूप से सुसंस्कृत हो जाएंगे। संस्कृति एक सतत गतिमात्र संस्कारात्मक प्रक्रिया है। संस्कार मनुष्य को अपनी धरती की परिपाटी के अनुसार मानव को सदाचारी एवं सात्विक बनाते हैं। संस्कृति मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करती है। खेद के साथ कहना पड़ता है कि आज भारत का दिग्भ्रान्त युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति के अंधाधुंध प्रचार के कारण अपनी भारतीय संस्कृति से विमुख हो चुका है और अपने ही घर में एक अजनबी की तरह रह रहा है। प्रगतिशील होने के नाम पर युवक और युवतियां मुक्त हवा में सांस लेने के बहाने अपरिपक्व यौन संबंधों से अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। आध्यात्मिकता, नैतिकता, शिष्टाचार व आदर्श जीवन मूल्य इनके जीवन से कोसों दूर रह गए हैं। संस्कृति का मेरू समाज का चरित्र होता है और सामाजिक चरित्र का आधार सामाजिक (व्यक्ति) होता है। युवा वर्ग सामाजिक मान्यताओं का उत्तराधिकारी होता है और बुजुर्ग-वर्ग नैतिक मान्यताओं का। जैसी नैतिक मान्यताएं उसे विरासत में मिलेंगी वह उन्हीं का अनुसरण करेगा। आज शिक्षा के नाम पर हम युवा पीढ़ी का भविष्य धूमिल कर रहे हैं। विद्यार्थी जीवन का स्वर्णिम काम उसे निरुत्साहित कर देता है। अन्तत: वह विषैली औषधियों से अपना जीवन नष्ट कर लेता है। कारण यह है कि आज का परिवेश उसे अपनी संस्कृति से जुड़ने ही नहीं देता। वर्तमान स्थिति में अगर युवा पीढ़ी के नैतिक स्तर में सुधार लाना है तो उसे शिक्षा का सही लक्ष्य बताना है। उसके जीवन में शिक्षा द्वारा मानवोचित गुणों का संचार करना होगा।

गुरुकुल प्रणाली परम्परा में शैक्षिक मान्यताएं विद्यार्थी को जीवन के उन नैतिक मूल्यों से जोड़ती थी जो उन्हें भारतीय नैतिकता की पहचान कराते थे। इन्हीं नैतिक मानदंडों के कारण भारतीय संस्कृति एक अमर संस्कृति बनी है।

भारतीय नैतिकता सामान्य जनजीवन व नैतिकता है। 'अहिंसा परमोधर्म' का उद्घोष करने वाले उदार भारतीयों ने 'आत्मवत् सर्व भूतेषु कह कर पूरे ब्रह्माण्ड के जीवों को ही अपने स्नेह का भाजन बना लिया। सामाजिक स्तर पर एक दूसरे के प्रति सद्भाव बनाए रखने के लिए अनेक सिद्ध-साधकों, गुरुओं-पीरों व कवियों ने अपने जीवन के निष्कर्ष अपने ग्रंथों में लिपिबद्ध किये हैं। कवि कुल शिरोमणि तुलसीदास ने राम चरित्र मानस में राजा-प्रजा, भाई-भाई, पति-पत्नी माता-पुत्र, सेवक-स्वामी आदि अनेक सम्बन्धी पर नैतिक मान्यताओं का सोदाहरण विवेचन किया है जो मानव को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

5 सितम्बर अध्यापक दिवस पर विशेष....

गुरू (आचार्य) का शिष्य को उपदेश

शिक्षा संस्था में जिस प्रकार का चरित्र युवक का बन जाना चाहिए, जिस प्रकार उसे समाज में रहना और बरतना चाहिए, उसका एक चित्र तैत्तिरीयोपनिषद की शिक्षा-वल्ली में पाया जाता है। एक गुरू, अध्यापक और आचार्य द्वारा अपने शिष्य को जो शिक्षा दी जाती थी उससे उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता था। आज अध्यापक दिवस तो मनाया जाता है परन्तु एक अध्यापक का शिष्य के प्रति क्या कर्त्तव्य है? एक शिष्य का अध्यापक के प्रति क्या कर्त्तव्य है, इससे अध्यापक और शिष्य दोनों अनभिज्ञ हैं। वैदिक शिक्षा पद्धति में आचार्य के द्वारा शिष्य का निर्माण इस प्रकार से किया जाता था कि वह अपने सभी कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक हो जाता था। वे कर्त्तव्य क्या हैं? जिनका प्रत्येक शिष्य और मनुष्य को पालन करना चाहिए? आईये तैत्तिरीयोपनिषद के कुछ वाक्यों पर चिन्तन करते हैं जिनमें गुरू शिष्य को सम्बोधित करते हुए कहता है-

सत्यं वद, धर्मं चर - गुरू शिष्य को उपदेश करता है कि जीवन में हमेशा सत्य बोलना और धर्म का आचरण करना। जीवन में हमेशा सत्य की विजय होती है और धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति जीवन में सुखी रहता है। मनुस्मृति में धर्म के लक्षण बताते हुए कहा है कि वेद, स्मृति, सदाचार और अपनी आत्मा को प्रिय लगने वाला इसे धर्म कहते हैं। झूठ बोलने वाला और अधर्म के मार्ग पर चलने वाला भले ही आपको उन्नति करता दिखाई दे परन्तु उसका अन्तिम परिणाम दु:ख है। इसलिए आपने अपने जीवन में हमेशा सत्य और धर्म को अपनाना है।

स्वाध्यायान्माप्रमद:-स्वाध्याय के दो अर्थ हैं- एक उत्तम ग्रन्थों का अध्ययन जिससे भौतिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति हो, दूसरा स्व अर्थात् अपने आप का अध्ययन। इसलिए जीवन में कभी भी स्वाध्याय से प्रमाद मत करना। स्वाध्याय के बिना मनुष्य को धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, लाभ-हानि का ज्ञान नहीं होता। ऐसे मनुष्यों का जीवन पशुओं की तरह होता है जिनका उद्देश्य केवल खाना-पीना, सोना-जागना करना होता है। स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसलिए गुरू कहता है कि जीवन में कभी भी स्वाध्याय से प्रमाद मत करना।

आचार्य का प्रिय धन लाकर देना-आचार्य शिष्य को सम्बोधन करके कहता है कि आचार्य को जो धन प्रिय है वह लाकर उसे देना, इस प्रकार आचार्य के शिष्यों की जो प्रजा है उसका सिलसिला मत तोड़ देना। आचार्य का प्रिय धन रूपया पैसा नहीं है, आचार्य का धन उसके शिष्य है, यही उसकी प्रजा है। जिस प्रकार आप शिक्षाध्ययन के लिए मेरे पास आए हो उसी प्रकार अपने सम्बन्धी, पुत्र, पौत्र आदि विद्याध्ययन के लिए आते रहें।

स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्- पहले कहा था कि स्वाध्याय से प्रमाद मत करना, अब कहते हैं कि स्वाध्याय के द्वारा जो प्राप्त किया है उसका प्रवचन करना, दूसरों को भी वह ज्ञान देना। ज्ञान देने से बढ़ता है। इसलिए जो स्वाध्याय करो, जिस ज्ञान की उपलब्धि करो उसे दूसरों तक प्रवचन से पहुँचाओ। इसलिए इस कार्य से कभी भी प्रमाद मत करना।

देवपितृकार्यभ्यां न प्रमदितव्यम्- जो ज्ञान में अपने से बड़े हैं वे देव कहलाते हैं, जो आयु में बड़े हैं वे पितर कहलाते हैं। ज्ञान से जो बड़े हों, भले ही वे तुम्हारे आचार्य न रहे हों, उनकी कही बात को कभी मत टालना। इसी प्रकार आयु में जो बड़े हों, भले ही वे तुम्हारे माता-पिता न हों, उनकी बात भी बिना प्रमाद के सुनना। ज्ञान तथा आयु में जो भी बड़ा हो कभी भी उनका निरादर न करना, उनकी आज्ञा पालन में प्रमाद मत करना।

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव- गुरू शिष्य को कहता है कि माता, पिता, आचार्य और अतिथि की यथायोग्य सेवा और सत्कार करना। देवता मानकर कभी इनकी आज्ञा की अवहेलना मत करना। माता ने तुम्हें नौ महीने पेट में रख कर पाला, पिता ने तुम्हारा पालन-पोषण किया, आचार्य ने तुम्हें विद्या देकर मनुष्य बनाया, अतिथि जिसका आपके माता-पिता भी आदर करते हैं- इसलिए इन सबको देवता समान मानना। इनकी सेवा करते हुए आशीर्वाद प्राप्त करना। नीतिकार ने भी कहा है कि जो अपने माता-पिता, बड़ों की सेवा करता है, प्रात: उठकर चरण स्पर्श करते हुए आशीर्वाद प्राप्त करता है, विद्या, बुद्धि, यश और बल चार गुणों की वृद्धि होती है।

यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि- आचार्य कहते हैं कि समाज में सब तरह के लोग हैं, यह ठीक है कि हम तुम्हें अपने से बड़ों की बात ध्यान से सुनने तथा उनके मार्ग पर चलने का उपदेश दे रहे हैं- देव हैं, पितर हैं, माता है, पिता है, आचार्य है, अतिथि है- इन सबको बड़ा मानकर इनकी आज्ञा का पालन करने को कहा गया है, परन्तु इनकी मानने योग्य बात हो, आचरण करने योग्य व्यवहार हो उसी का अनुकरण करना, जो अवगुण या त्याज्य गुण हो उसे कभी भी ग्रहण मत करना।

यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि नो इतराणि- इसी प्रकार गुरू शिष्य को उपदेश देता है कि गुरू के, आचार्य के भी उन्हीं गुणों को जीवन में धारण करना, उन्हीं आचरणों का अनुकरण करना जो सुचरित हों, आचार्य भी बुरा काम करे तो उस पर भी अंगुली उठा देना और अगर बुरा कार्य करने को कहे तो इन्कार कर देना। ऐसी बात उसी गुरू के मुख से निकलती है जिसे अपने आचरण पर पूरा भरोसा हो।

श्रेष्ठ व्यक्ति का संग करना- जिन लोगों का ऊपर वर्णन किया गया है, उनमें भी जो श्रेष्ठ व्यक्ति हों उनके पास बैठना, उनका संग करना। कभी भूलकर भी बुरे वातावरण में मत जाना क्योंकि वहां का वातावरण भी बुरे विचारों से भरा होता है। जहां महात्मा और अच्छे लोग रहते हैं वहां का वातावरण भी शुद्ध तथा पवित्र विचारों से भरा होता है। इसलिए उत्कृष्ट व्यक्तियों को ढूँढ़- ढूँढ़कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करना।

वर्तमान शिक्षापद्धति के मूल्यहीन होने का कारण यही है कि गुरू और शिष्य दोनों ने इन आदर्श वाक्यों को भुला दिया है। आज की शिक्षा पद्धति नैतिक मूल्यों से विहीन है क्योंकि गुरू और शिष्य के बीच में कोई भावनात्मक सम्बन्ध नहीं है। वर्ष में एक बार अध्यापक दिवस मनाकर अपने कर्त्तव्य की पूर्ति कर ली जाती है। आज की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य केवल रोटी , कपड़ा और मकान की जरूरतों को पूरा करना और भौतिक रूप से उन्नत होना रह गया है। इसीलिए संस्कारों का कोई महत्व नहीं रह गया है। शिष्य क्या कर रहा है? कैसी उसकी संगति है? उसका खान-पान, व्यवहार कैसा है? उसके अन्दर किन गुणों का विकास हो रहा है, इन सब बातों से अध्यापकों का कोई सम्बन्ध नहीं है। अपने विषय को पढ़ाना ही एकमात्र उनका उद्देश्य है जिसके कारण समाज में बुराईयां पैदा हो रही हैं। आज पढ़े-लिखे लोग अपने पद का दुरूपयोग करते हुए, अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए भ्रष्टाचार करते हैं, मिलावट करते हैं, चोरियां करते हैं क्योंकि उन्हें शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार नहीं मिले हैं। तैत्तिरीयोपनिषद में कही गई बातों के अनुसार गुरू, आचार्य का जीवन हो और वे अपने शिष्यों का इसी प्रकार निर्माण करें तो सभी बुराईयों को समाप्त किया जा सकता है। इसलिए अध्यापक दिवस मनाने का यही तात्पर्य है गुरू और शिष्य दोनों अपने कर्त्तव्यों को समझें और उनका जीवन में पालन करें। आज का अध्यापक अगर एक विद्यार्थी का भी अच्छी प्रकार से निर्माण करता है, उसे समाज के लिए उपयोगी बनाता है, उसके चरित्र का निर्माण करता है, उसके अन्दर धार्मिक गुणों का विकास करता है तो अध्यापक दिवस मनाना सार्थक हो सकता है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज और वेदप्रचार

ले०-डॉ० महेश विद्यालंकार

''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।'' ऐसा क्रान्तिकारी उद्घोष ऋषि दयानन्द से पूर्व किसी ने नहीं किया। वर्तमान में इतने शंकराचार्य, पंथ, सम्प्रदाय, महन्त आदि हैं, कोई भी वेदों के प्रति ऐसी मान्यता व धारणा नहीं रखते। ऋषि की महत्वपूर्ण विशेषता व देन है-वेदों की ओर लौटो, मेरी नहीं वेदों की मानो। वेद आज्ञा ही आज के भूले, भटके, अशान्ति, संघर्ष, हिंसा, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि में लिप्त मानव-समाज को सच्चे सुख, शान्ति, प्रसन्नता, नीरोगता, विश्वशान्ति, विश्वबंधुत्व और विश्वमानवता का मार्ग दिखा सकता है। वेदज्ञान सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्व-देशिक तथा सार्वजनिक है। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश और सन्देश है। वेदज्ञान इस देश की अद्वितीय सम्पदा है।

आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवित-जाग्रत स्मारक और उत्तराधिकारी है। स्वामी जी के अधूरे स्वप्नों व कार्यों की पूर्ति की जिम्मेदारी आर्य संगठनों, सभाओं, संस्थाओं एवं आर्य समाज की है। कोई संस्था, संगठन व महापुरुष अमर व जीवित विचारों और सिद्धान्तों से रहता है। ऋषि दयानन्द स्वयं में सिद्धान्त व विचार थे। वेद प्रचार आर्य समाज को विरासत, वसीयत एवं परम्परा में मिलता है। आर्यो! ऋषि का अमर सन्देश गूंज रहा है-वेद-वेद-वेद करो, वेदानुकूल जीवन जीओ। वेद ज्ञान जन-जन तक पहुंचाओ। जितना वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार होगा, उतना संसार से अज्ञान, जड़ता, पशुता, ढोंग-पाखण्ड आदि दूर होंगे। सच्चे अर्थ में मानव, मानव बन सकेगा। वेदों का जीवनदर्शन जगत् को सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग दिखाता है। आर्य समाज का मुख्य एजेण्डा वेद प्रचार है। वेद प्रचार घटने के कारण ही आज अन्धविश्वास, ढोंग-पाखण्ड, जड़पूजा, गुरुवाद आदि बढ़ रहा है। धर्म, भक्ति और परमात्मा बाजार-व्यापार बन रहे हैं। धर्म के नाम पर अधर्म फैल रहा है। जो आज धार्मिक क्षेत्र में अन्धकार व पाखण्ड फैल रहा है, उसमें आर्य समाज प्रकाशस्तम्भ की भूमिका निभा सकता है। कभी आर्य समाज जागते रहो, जागते रहो की भूमिका में था। आर्य समाज का अतीत अत्यन्त प्रेरक उज्ज्वल, अनुकरणीय, स्मरणीय एवं वन्दनीय रहा है। जितना गर्व-गौरव करें, थोड़ा है। वर्तमान अत्यन्त चिन्तनीय, विचारणीय हो रहा है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। दैनिक, साप्ताहिक, वार्षिकोत्सवों, यज्ञ कथा आदि में उपस्थिति कम हो रही है। उत्सवों पर लोगों को लंगर का प्रलोभन दिखाकर भीड़ जुटाई जा रही है। पुराने विद्वान्, वक्ता, संन्यासी, भजनोपदेशक, कार्यकर्त्ता, सदस्य, अधिकारी आदि जा रहे हैं, उस तीव्रता से नये लोग नहीं आ रहे हैं। पहले भवन कच्चे होते थे, लोग विचारों, सिद्धान्तों, आदर्शों और आचरण से पक्के होते थे। लोग जीवन व आचरण से कमजोर हो रहे हैं। तेजी से आर्य समाज अपने मूल सिद्धान्तों, उद्देश्यों, आदर्शों, विचारों से हट व भटक रहा है। आज आर्य समाज के पास भवनों, स्कूलों, संस्थाओं, संगठनों आदि की भौतिक सम्पदा अरबों की है। बाहर का कलेवर लम्बा-चौड़ा है, मगर आन्तरिक दृष्टि से स्थिति गंभीर व शोचनीय है। जो हमें लड़ाई अज्ञान, अशिक्षा, ढ़ोंग-पाखण्ड़ आदि के विरोध में लड़नी चाहिए थीं, वह आपस में लड़ पड़े। आर्य समाज को बाहर से किसी ने कमजोर नहीं किया, वह अपनों से ही कमजोर हो रहा है। आपसी स्वार्थ, अहंकार के कारण विवाद व संघर्ष बढ़ रहा है। उसके मूल में एक मजबूत कारण यह भी है कि हमारे जीवन, विचारों व आचरण में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, तप, त्याग, सेवाभाव आदि की कमी हो रही है। ये बातें जीवन को संभालती व सन्तुलित रखती है। सन्ध्या व यज्ञ धार्मिक जीवन के आधार हैं। ऋषि का जीवन कह रहा है-भक्ति से शक्ति मिलती है। उन्होंने ईश्वरोपसना कभी नहीं छोड़ी। जो हमारे यज्ञ, कथा, सत्संग, कार्यक्रमों में सात्विकता, धार्मिकता, स्वच्छता, शान्तिमय वातावरण, प्रेरक प्रभाव आदि होना चाहिए, उसका तेजी से अभाव हो रहा है। हमें दूसरों से सीखना चाहिए। आज हमारे कार्यक्रम जलसा, जलूस, लंगर फोटो, माला, स्वागत, सम्मान, भाषण, प्रस्ताव योजनाओं आदि तक सीमित हो रहे हैं। क्रियात्मक व प्रेरक जीवन से दूर हो रहे हैं। जो आर्य समाज कभी दूसरों की शुद्धि करता था, आज उसे सच्चाई की जरूरत है। आर्य समाज की भ्रष्ट, स्वार्थ पदलिप्सा, अहंकार आदि की राजनीति ऋषि के मिशन को खोखला, जर्जरित, कमजोर तथा प्रभावहीन बना रही है। भावनाशील ऋषिभक्त, आर्य विचारधारा प्रेमी, और समाज हितैषी लोग अन्दर से दुखी, बैचेन और आहत हैं, उनकी न कोई सुनता है और न मानता है।

वेद प्रचार जनता से जुड़ने, उन तक पहुंचने और सन्मार्ग दिखाने का उत्तम मार्ग है। आर्य समाज के पास भौतिक, अद्वितीय सम्पदा-वैचारिक चिन्तन और मान्यताएं हैं। आज भी आर्य समाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। आज संसार सुविचारों के अभाव से जीवन व जगत् को नरक बनाकर जी रहा है। आर्य समाज का जो जीवन-दर्शन है, वह हमें इहलोक और पदार्थ की सुखद विचार दृष्टि देता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व निर्माण उसका अन्तिम लक्ष्य रहा है। आज आर्य समाज जनता से कट व हट रहा है। आज का युग मीडिया, विज्ञापन व प्रचार का है। दुर्भाग्य है कि आज तक आर्य समाज अपना वैदिक चैनल नहीं बना सका है, जब कि हम महासम्मेलनों पर करोड़ों रूपये कुछ समय के लिए खर्च कर देते हैं। उतने में रचनात्मक प्रेरक उपदेशक विद्यालय व गुरुकुल चल सकता है। जो कि स्थायी निर्माण का कार्य है। जिनके पास सिद्धान्त, विचार, आदर्श, जीवनमूल्य, सत्यज्ञान और संस्कृत-संस्कृति बोध नहीं है, वे मीडिया चैनलों, सार्वजनिक मंचों पर छा रहे हैं। आर्य समाज के पास, वेदज्ञान, ऋषि परम्परा, यज्ञ, प्रेरक सात्विक, आध्यात्मिक भक्तिपूर्ण भजन, योग द्वारा जनता को बुलाया व जोड़ा जा सकता है। आज हम आर्य विचारधारा और ऋषि को आम आदमी व युवा पीढ़ी तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं। पौराणिकों ने रामचरित मानस और हनुमान चालीसा को घर-घर तक पहुंचा दिया, सभी पढ़ व सुन रहे हैं। आर्य समाज वेदों को सरल भाव में घर-घर तक नहीं पहुंचा सका है। उस विषय पर गंभीरता से सोचने व कदम उठाने की जरूरत है। वेद की ज्योति जलती रहे, नारे से काम नहीं चलेगा। आज हम देश, काल, समय के अनुसार विद्वानों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों, प्रचारकों, संन्यासियों आदि को तैयार नहीं कर पा रहे हैं। आर्य समाज के पास युवकों को जोड़ने वाली प्रेरक संस्थाएं नहीं हैं, जो आधुनिक समयानुसार उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सकें। आज की युवा पीढ़ी भटकन, अन्धविश्वास व अज्ञान में फंस रही है। वह सत्य व शान्ति चाहती है। वह ढोंग-पाखण्ड, आडम्बर, गुरु, महन्तों, सन्तों आदि से तंग हो गई है। आर्य समाज के पास सद्ज्ञान विचार प्रेरणा व जीवन दर्शन है, किन्तु परन्तु... लेकिन हमें कहना आता है, करना नहीं आता। युवा पीढ़ी भाषण नहीं, आचरण देखती है। आर्य समाज को अपने स्वरुप को संभालने तथा पुनर्मूल्यांकन की जरूरत है। वर्तमान जीवन जगत की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान वैदिक जीवन-दर्शन में हैं। अतः आर्यो उठो! जागो! सोचो! विचारो! करो। यह समय विवाद का नहीं, संवाद का है। चिन्ता नहीं, चिन्तन करो। जिन उद्देश्यों, आदर्शो व सिद्धान्त के लिए ऋषिवर ने आर्य समाज बनाया था, उन्हें समझो, पढ़ो और आगे बढ़ो। यही वेद प्रचार है।

आर्य समाज राजपुरा में वेद सप्ताह

आर्य समाज राजपुरा टाउनशिप में रक्षा बन्धन एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व के उपलक्ष्य में सामवेदीय महायज्ञ का आयोजन 3 सितम्बर 2018 से 9 सितम्बर 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत के ख्याति प्राप्त वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री जयेन्द्र जी गुरुकुल नोएडा होंगे। इस अवसर पर पंडित सुमित्र देव आर्य जी सहारनपुर के मधुर भजन होंगे। यह कार्यक्रम 3 सितम्बर से 8 सितम्बर 2018 तक प्रातः 6.30 बजे से 9.00 बजे तक एवं सायं 4.00 बजे से 7.00 बजे तक होगा। मुख्य समारोह 9 सितम्बर 2018 रविवार को प्रातः 8.00 बजे से 10.00 बजे तक 151 कुंडीय हवन यज्ञ से होगा। 10.00 बजे से 12.30 बजे तक भजन एवं प्रवचन होंगे। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस अवसर पर धर्म लाभ उठावें।

विजय आर्य (मुनि)
प्रधान आर्य समाज

नैतिकता की अवधारणा और शिक्षा में उसका उपयोग

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

महाभारत के शांति पर्व के अध्याय 68 में श्लोक 28 का कथन है-

'यज्जेत त्रयो दण्डनीतो हतायां सर्वे धर्मा: प्रक्षये युर्वि वृद्धा:।

सर्वे धर्माश्चाश्रमाणां हता: स्यु: क्षात्रे त्यक्ते राज धर्मे पुराणे।

अर्थात्-राजा की दण्डनीति सशक्त न होवे तो ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद तीनों रसातल को चले जाएं तथा वेदों के लुप्त होने से समाज में प्रचलित हुए संस्कृति और सदाचार के आधार समस्त धर्म नष्ट हो जाएं तथा ब्रह्मचर्यादि चारों आश्रमों की मर्यादा भी ध्वस्त हो जाए। राजधर्म और राजनीति का विनाश होने पर समस्त लोक व्यवस्था के भी लुप्त होने की संभावना बन जाती है। नीति का अर्थ होता है जिसके द्वारा जनता को सदाचार में स्थापित किया जाता है। उसे कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर अग्रसर किया जाता है। 'नयनान् नीति रूच्यते' शुक्रनीति अध्याय 1 श्लोक 157 प्रजा को धर्म के मार्ग पर ले जाने के कारण ही उसे नीति कहते हैं और नीति के प्रयोग की विधि ही नैतिकता कहलाती है। वेदों, दर्शनों, उपनिषदों, नीति शास्त्रों, स्मृति ग्रन्थों, धर्म सूत्रों आदि में नीति के विषय में विस्तृत वर्णन हुआ है। अब हम इन ग्रन्थों के आधार पर नीति और नैतिकता के विषय में चर्चा करते हैं।

'अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्'। यजु. 40.10

हे प्रकाश स्वरूप परमात्मा। आप सम्पूर्ण ज्ञान के भण्डार हैं तथा प्राणियों को सुख के देने वाले हैं। कृपा करके हमें विज्ञान और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए धर्म युक्त आप्त पुरूषों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये। धर्म युक्त आप्त लोगों के मार्ग पर चलना ही नैतिकता है।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।

इदमहमनृतात सत्यमुपैति।। यजुर्वेद 1.51

हे अग्नि स्वरूप सम्पूर्ण व्रतों के स्वामी परमात्मा। मैं आज असत्य से भिन्न सत्य बोलना सत्य मानना और सत्य ही करने का व्रत ले रहा हूँ। मेरे इस व्रत को सिद्ध करने के लिए आप मुझे शक्ति प्रदान करें। यह सत्य का पालन ही नैतिकता है।

अनुव्रत पितु: पुत्रो मात्राभवतु संमना:। जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्। अथर्व. 3.30.2 पुत्र पिता का अनुव्रती हो अर्थात् पिता जिन श्रेष्ठ कर्मों का आचरण करता रहा है वैसे ही श्रेष्ठ आचरण पुत्र भी अपने जीवन में धारण करे तथा उसके विचार अपनी माता के मन के अनुकूल होवें। पत्नी पति के साथ मधुर वाणी से संवाद करे और सदैव ऐसी वाणी बोले जिससे शान्ति का वातावरण बने। इस प्रकार कार्य करना ही नैतिकता कहलाता है। जब यह शिक्षा में स्थान प्राप्त करेगा तभी सफलता प्राप्त होगी।

येन देवान वियन्ति नो च विद्विषते मिथ:।

तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरूषेभ्य:।। अथर्व .3.30.4

हे गृहस्थों। मैं ईश्वर जिस प्रकार के व्यवहार से विद्वान् लोग परस्पर पृथक् भाव वाले नहीं होते और परस्पर में द्वेष कभी नहीं करते, वही कर्म तुम्हारे घर में निश्चित करता हूँ। पुरूषों को अच्छी प्रकार चिताता हूँ कि तुम लोग परस्पर प्रीति से वर्त कर धन और ऐश्वर्य को प्राप्त करो।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। ऋ. 10.191.2

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।

पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्यों के मानी बनो।

समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।

समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋ 10.191.4

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।

मन भरें हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा।।

स्योना भव श्वशुरेभ्य स्योना पत्ये गृहेभ्य:।

स्योना स्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव।। अथर्व. 14.2.27

हे वधू। तू श्वशुरादि के लिए सुख प्रदाता बन। पति के लिए सुख प्रदाता बन और इस सब प्रजा के लिए सुख प्रदाता बन।

अब योग शास्त्र के आधार पर विचार करते हैं।

तत्राहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या-परिग्रहायमा:।। यो. 2.30

(अहिंसा) वैर त्याग (सत्य) मन, वचन और कर्म में एक रूपता सत्य ही सोचना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) मन, वचन और कर्म से चोरी का त्याग अर्थात् किसी भी व्यक्ति की वस्तु को उसके स्वामी की आज्ञा बिना न लेना, (ब्रह्मचर्य) लगातार ब्रह्म चिन्तन एवं उपस्थेन्द्रिय पर नियन्त्रण (अपरिग्रह) स्वत्वाभिमान रहित होना तथा भौतिक पदार्थों क संग्रह से बचना। ये पांच यम कहलाते हैं। इन्हें ही जैन धर्म में पांच महाव्रत कहा जाता है।

शौच संतोष तप: स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमा:। यो.2.32

(शौच) शारीरिक, मानसिक और आत्मिक पवित्रता (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर धर्म के मार्ग से पुरूषार्थ करके अर्थ उपार्जन करना और जो धन प्राप्त होवे उसी से सन्तुष्ट रहना (तप:) धर्म के मार्ग पर होने वाले कष्टों को सहज स्वीकार करना (स्वाध्याय) आर्व ग्रन्थों का नित्य पठन पाठन करना और (ईश्वर प्रणिधान) ईश्वर की भक्ति विशेष में आत्मा को लगाए रखना।

उपनिषदों में भी नैतिकता का विशद वर्णन हुआ है।

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यान्मा प्रमद:।। तैति. 1.11.1

सदैव सत्य बोलो। सदैव धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय में कभी भी प्रमाद मत करो।

देव पितृ कार्यभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृ देवो भव। पितृ देवो भव/आचार्य/देवो भव/अतिथि देवोभव/यान्यवद्या नि कर्मणि तानि त्वयो पास्यानि नो इतराणि।। तैति. 1.11.2

देव पितृ कार्यों में कभी प्रमाद मत करना। माता को देवी मानना। पिता को देवता मानना। आचार्य को देवता मानना। अतिथि को देवता मानना। हमारे जो श्रेष्ठ आचरण हैं उनका अनुगमन करना। दूसरों का अनुगमन मत करना।

ये के चास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणा: तेषां त्वया ऽऽ सनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रियादेयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। तैति. 1.11.3 और जो कोई हमसे श्रेष्ठ अन्य ब्रह्मण हैं। उनका तुमको आसन से सत्कार करना चाहिए। श्रद्धा से दान करना चाहिए। अश्रद्धा से भी दान करना चाहिए। प्रसन्नता से दान देना चाहिए। लज्जा से दान देना चाहिए। भय से भी दान देना चाहिए। प्रेमभाव से दान देना चाहिए।

गोस्वामी तुलसी दासजी कहा है-परहित सरिस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहीं अधमाई। अब शुक्रनीति पर विचार करते हैं।

सर्व लोक व्यवहार स्थितिर्नीत्या बिना न हि।

यथाऽशनैर्बिना देह स्थितिर्न-स्याद्धि देहि नाम।। शुक्र. 1.11

जिस प्रकार भोजन के बिना शरीर की स्थिति नहीं हो सकती। उसी प्रकार नीति शास्त्र के बिना सम्पूर्ण लोक व्यवहार की स्थिति भी नहीं हो सकती है। संसार के संचालन की नीति को नीति शास्त्र के अतिरिक्त कोई भी नहीं बना सकता है।

विद्यायाश्च फलं ज्ञानं विनयस्य फलं श्रिय:।

यज्ञ दाने बल फलं सद्रक्षण-मुराहृतम्।। शुक्र. 3.92

विद्या का फल ज्ञान, विनय का फल श्रेष्ठता, धन का फल यज्ञ और दान है। बल का फल सज्जनों की रक्षा करना है।

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

यत्रै तास्तुन पूज्यन्ते सर्वास्त-त्राऽफला: क्रिया।। मनु. 3.56

जिस घर में स्त्रियों का मान होता है। उस घर में विद्वान् लोग आनन्द से क्रीड़ा करते हैं परन्तु जिस घर में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता है उस घर में सब क्रिया निष्फल हो जाती है। स्त्रियों का सम्मान करना नैतिकता है।

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेवित:।

चत्वारि तस्य वर्धनते आयुर्विद्या यशोबलम्।। मनु. 2.121

जो व्यक्ति नित्य ही वृद्धों का अभिवादन करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ता है। मनु. स्मृति 2.199 में कहा गया है कि अपने आचार्य का सामान्य सम्बोधन में नाम न लें। इसी प्रकार मनुस्मृति 2.212 में कहा गया है कि युवती गुरू पत्नी का चरण स्पर्श

(शेष पृष्ठ 7 पर)

मनुष्य के ऊपर पाँच कारणों का प्रभाव विशेष होता है

ले०-पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोविन्द राय आर्य एण्ज सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता

मनुष्य का जीवन अच्छा बने या बुरा बने इसके लिए उसके जीवन पर पाँच कारणों का प्रभाव विशेष दिखाई देता है। उन्हीं के अनुसार मनुष्य का जीवन अच्छा या बुरा बनता है। वे पाँच कारण इसी भाँति है।

१. पूर्व जन्म में किये कर्मों के अनुसार: मनुष्य अपने पूर्व जन्म में यानि इस जन्म से पहले वाले जन्म में उसने अच्छे या बुरे जैसे भी कर्म किये थे उसी के अनुसार ईश्वर उस जीव को अगली योनि, जाति, आयु, भोग के रूप में देता है। जाति का तात्पर्य यह होता है कि उस जीवन को अगली योनि मनुष्य, पशु-पक्षी या कीट-पतंग आदि की योनि उसके पिछले किये कर्मों के अनुसार देता है। इनमें मनुष्य योनि सबसे उत्तम व श्रेष्ठ है। साथ ही यह योनि अन्तिम योनि होने से मोक्ष का द्वार भी है। जो जीव का मुख्य लक्ष्य हैं। मोक्ष की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को धरती पर भेजता है। इसीलिए जीव का मनुष्य जीवन पाना उसके अच्छे किये कर्मों का फल है। जाति कभी बदली नहीं जाती यानि वह जीव उम्र भर उसी योनि में रहेगा। आयु और भोग, कम व अधिक हो सकते हैं। मान लीजिये किसी मनुष्य की आयु, ईश्वर ने उसके किये कर्मानुसार अस्सी वर्ष की दी है। वह मनुष्य अपने जीवन में पूर्ण संयम से रहता है। योग, आसन, व्यायाम आदि करता है, भोजन पौष्टिक करता है, विचार सुन्दर रखता है, किसी के प्रति ईर्ष्या, द्वेष की भावना नहीं रखता है। सदैव प्रसन्नचित रहता है, उसकी आयु अस्सी से अधिक हो जायेगी। यदि वह साधारण रूप से रहता है तो उसकी आयु अस्सी ही रहेगी। और यदि निम्नस्तर से रहता है तो उसकी आयु कम हो सकती है। भोग का तात्पर्य यह है कि वह जीवन में क्या खायेगा, उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा या नहीं, उसके सुख के साधन क्या है, उसके जीवन में सुख-दु:ख कैसे आवेंगे आदि। यह सब भोग में आता है। अच्छा जीवन बिताने से आयु की भाँति भोग भी घटाया या बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार मनुष्य के ऊपर पूर्व जन्म के किये कर्मों का प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है।

२. माता-पिता का प्रभाव: मनुष्य के ऊपर माता-पिता का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है। किस व्यक्ति के माता-पिता संयमी, निष्कपट, निष्छल, संस्कारित व उदार प्रवृति के होते हैं जिनके जीवन में ईमानदारी हो, झूठ नहीं बोलते हों, सबसे सुन्दर व्यवहार करते हों, बच्चों को भी अच्छी शिक्षा देते हो, उनकी सन्तान अपने माता-पिता को देखकर वैसे ही बन जाती है। इसके विपरीत जिनके माता-पिता का जीवन घटिया हो उनके बच्चे भी बेईमान, दुराचारी, दुष्ट, लफंगे व कमजोर होते हैं। इस प्रकार माता-पिता का प्रभाव भी बच्चों पर बहुत अधिक पड़ता है। उदाहरण के तौर पर श्री राम के ऊपर माता कौशल्या का और शिवा जी के ऊपर माता जीजाबाई का प्रभाव पड़ा था।

३. परिवार के सदस्यों का प्रभाव: बच्चों पर माता-पिता के प्रभाव के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है। परिवार के चाचा-चाची, ताई-ताऊ, दादा-दादी तथा उनकी सन्तान जिनके साथ बच्चा सदैव मिलता-जुलता रहता है, उनका प्रभाव भी बहुत पड़ता है। साथ ही रिश्तेदारों व पड़ोसियों का प्रभाव भी बहुत पड़ता है। बच्चे का आठ-दस वर्ष तक का जीवन अपने घर के सदस्यों के साथ अधिक बीतता है इसलिए घर का वातावरण अच्छा होगा तो बच्चे के चरित्र तथा स्वभाव पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। अन्यथा बच्चे के चरित्र, स्वभाव व व्यवहार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

४. बच्चे के साथियों व मित्रों का प्रभाव: बच्चे के ऊपर उसके साथियों व मित्रों का प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है। यदि बच्चा अपने अच्छे माता-पिता व अच्छे परिवार में पलकर अच्छा है परन्तु बाद में उसको साथी व मित्र गलत मिल गये। बेईमान, झूठे व चरित्रहीन मिल गये, ताश, चौपड़, खेलने वाले, सिनेमा-फिल्म देखने वाले, जूआ खेलने वाले तथा अन्य प्रकार के गलत व अश्लील काम करने वाले मिल गये तो बच्चे पर उनकी कुसंगति का बुरा प्रभाव पड़ेगा और बच्चा उन्हीं के कुमार्ग पर चलने लगेगा। इसलिए बच्चे के माता-पिता उसके अभिवावकों को बच्चे का बहुत ध्यान रखना चाहिए। उसके साथी मित्र कैसे हैं, वह कहाँ-कहाँ आता-जाता है ? उससे मिलने वाले व्यक्ति कैसे है ? इन सब बातों का ध्यान जरूर-जरूर रखना चाहिए। यदि उसके साथी व मित्र अच्छे नहीं हैं तो उनसे दूर रखने के लिए किसी अच्छे गुरूकुल में भेज देना चाहिए ताकि वह कुसंगति से बच सके।

५. शिक्षा का प्रभाव: बच्चा जिस स्कूल में पढ़ता है, उस स्कूल के शिक्षक यदि अच्छे नहीं है और यदि उसकी कक्षा के विद्यार्थी अच्छे नहीं हैं तो इन दोनों का प्रभाव बच्चे पर बहुत अधिक पड़ता है। स्कूल की पढ़ाई का भी बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यदि बच्चों को इतिहास में राम, कृष्णा, महात्मा चाणक्य, शेर शिवा जी, महाराणा प्रताप, गुरू गोबिन्द सिंह, वीर सावरकर, सुभाषचन्द्र बोस व महर्षि दयानन्द के जीवन पर कोई प्रकाश नहीं डालोगे तो बच्चों को अपने राष्ट्र व अपने इतिहास पर गौरव का आभास कैसे होगा ? यदि बच्चों को बाबर, हुमायु, अकबर, अंग्रेजों का इतिहास ही पढ़ाया जायेगा तो वह बच्चा देश के सच्चे इतिहास से तो अनभिज्ञ ही रहेगा, इस स्थिति में वह देश के इतिहास पर क्या गौरव का अनुभव करेगा ? इसलिए बच्चों पर पढ़ाई का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

देश की सही उन्नति व आदर्श भारत तभी बनेगा जब हमारी सरकार गुरूकुलों की तरफ विशेष ध्यान देकर उनको प्रोत्साहित करेगी और प्रत्येक भारतीय अपने बच्चे व बच्चियों को गुरूकुलों में भेजकर प्रसन्न व आनन्दित होंगे। यह प्रसन्नता की बात है कि आजकल गुरूकुलों में केवल संस्कृत में वेद तथा ऋषि-मुनियों कृत आर्ष ग्रन्थ ही नहीं पढ़ाये जाते बल्कि उनके साथ विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल तथा कृषि व शिल्पकला सम्बन्धी शिक्षा भी दी जाती है जिससे गुरूकुलों के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बन सके। मेरा स्वयं का यह विचार है कि यदि भारत को पुन: ''विश्व गुरु'' के शीर्ष स्थान पर सुशोभित करना चाहते हो तो पहले की भाँति सरकार को गुरूकुलों की तरफ विशेष ध्यान देना पड़ेगा और जब गुरूकुलों में पड़े हुए विद्यार्थियों के हाथों सरकार की बाग-डोर आ जायेगी तभी भारत का चरित्र उभर कर विश्व के सामने आवेगा और तभी भारत उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होता हुआ अपने लक्ष्य ''विश्व गुरू'' के उच्चपद को प्राप्त कर सकेगा।''खुशहाल'' की आँखें भारत के उस गौरवपूर्ण समय की प्रतीक्षा में है। आशा है आदरणीय नरेन्द्र मोदी के शासन काल में वह समय शीघ्र ही आवेगा।

आर्य समाज चौक पटियाला में वेद पाठ एवं संस्कृत श्लोक गायन प्रतियोगिता

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। यह एक पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है। इस विषय में संसार के समस्त भाषा वैज्ञानिक एक मत है। आर्य समाज के संस्थापक एवं महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का मन्तव्य है कि संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत के ज्ञान के बिना वैदिक ज्ञान परम्परा एवं भारत के प्राचीन इतिहास को जानना असंभव सा है। बच्चों की संस्कृत दिवस एवं श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में रविवार दिनांक 2 सितम्बर 2018 को आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला में वेद पाठ एवं संस्कृत श्लोक गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। आप से प्रार्थना है कि आप अपने विद्यालय की प्रतिभागिता सुनिश्चित करके हमें कृतार्थ करें। प्रतिभागियों की पूर्व सूचना Email:aryasamajpatiala 1885@ gmail.com या Whatsapp No. 9464360065 पर दिनांक 30 अगस्त 2018 तक भेजने का कष्ट करें। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को विशेष रूप से पुरस्कृत किया जायेगा।

- राजकुमार सिंगला प्रधान आर्य समाज चौक पटियाला

पृष्ठ 5 का शेष-नैतिकता की अवधारणा...

न करके दूर से ही अभिवादन करें।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।। मनु 4.138

सदा प्रिय और दूसरे का हितकारक बोले, अप्रिय सत्य न बोले, दूसरों को प्रसन्न करने के लिए असत्य भी न बोले। यही सत्य सनातन धर्म है, यही नैतिकता है।

धर्म सूत्रों में तो किस तरह उठें, बैठे, चले, भोजनादि करें पर भी पर्याप्त वर्णन हुआ है। धर्म सूत्रों में प्राचीनतम धर्म सूत्र गोतम धर्म सूत्र है। उसी में से कुछ चिन्तन करते हैं।

आचार्य तत्पुत्र स्त्री दीक्षित नामानि।

गो. धा.सू. 1.2.24

आचार्य, उनके पुत्र, उनकी पत्नी तथी दीक्षा लेने वालों के नाम उच्चारण नहीं करना चाहिए।

शय्यासन स्थानानि विहाय प्रतिश्रवणम्।। गो. ध.सू.1.2.30

गुरू के कुछ पूछने पर शय्या, आसन और स्थान से उठ कर उत्तर देना चाहिए।

गच्दन्तं गुरूमनुगच्छेत्।। गो.ध.सू. 1.2.33

गुरू के चलने पर उनके पीछे-पीछे चले।

अनिचयो भिक्षुः।। गो.ध.सू. 1.3.10

प्रतिदिन माता-पिता आदि के मिलने पर उनके चरण स्पर्श करने चाहिए।

सन्निपाते परस्य।। गो.ध.सु. 1.6.4

माता-पिता आदि सभी श्रेष्ठजनों के एक साथ भेंट होने पर इनमें सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति का चरण सर्वप्रथम स्पर्श करे।

श्रुतं तु सर्वेभ्यो गरीयः।। गो.ध.सू. 1.6.19

वेद का ज्ञाता ही सर्व श्रेष्ठ होता है।

मैं समझता हूँ कि यदि शिक्षा में इन सबका समावेश न होवे तो शिक्षा अधूरी ही है।,

पृष्ठ 2 का शेष-भारतीय संस्कृति और युवा...

मर्यादित जीवनयापन करने की प्रेरणा देकर पुरुषोत्तम बना देती है। यह पुरुषोत्तम कोई और नहीं 'गीता में वर्णित स्थित-प्रज्ञ और सुखमनी साहिब' में वर्णित 'ब्रह्म ज्ञानी' ही है जो ऊंच-नीच, मित्र-शत्रु, यश-अपयश, मान-अपमान को समान समझता है। वह अहं से रहित और विनम्र होता है।

ऐसे ही श्रेष्ठ पुरुष का आचरण अनुकरणीय होता है। भारतीय नैतिकता के संदर्भ में ही भारत को 'आर्यावर्त्त' कहा जाता था। इसी नैतिकता को पूरे विश्व में फैलाने के लिए महर्षि दयानन्द ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष किया था पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब भारतीय संस्कृति के नैतिक मान्यताओं का प्रामाणिक दस्तावेज़ है पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने वाला एकमात्र ग्रंथ भारतीय नैतिकता की मुंह बोलती तस्वीर है गुरुवाणी का यह संदेश

'सभ महि जोति जोत है सोई,

तिसु के चानण सभ महि चानुण होई।'

भारतीय नैतिकता की सर्वोत्तम गुणवत्ता यही है कि इसमें हर प्राणी को उस ईश्वर का स्वरूप जानकर उसका सम्मान किया जाता है। प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने सामाजिक नैतिक मान्यताओं 'किरत करो, नाम जपो, वंड छको' का संकल्प देकर मानवता को एक बार फिर नैतिकता की ओर प्रेरित किया।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने युवा वर्ग को सूत्रबद्ध करके उसकी असीम शक्ति को सार्थक एवं सृजनात्मक दिशा प्रदान की। उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भावना की अनूठी मिसाल पैदा की। उन्होंने भारतीय नैतिकता की परिधि में सामाजिक एवं आध्यात्मिक मान्यताओं को समञ्वित किया। उन्होंने भक्ति और शक्ति के सुमेल से युवा वर्ग के अंदर एक नैतिक ज़िम्मेदारी की भावना पैदा की। शुभ अथवा कल्याणकारी कार्य करना ही तो नैतिकता है। दशमेश पिता ने इसी भावना को विकसित करने के लिए उस परम पिता परमात्मा से अदम्य साहस की कामना करते हुए जो कुछ कहा है, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कल था :

'देहु शिव! वह मोहि इहै,

शुभ कर्मन ते कबहुं न टरौं।'

आर्य समाज नवांशहर में रक्षा बंधन से जन्माष्टमी पर्व तक वेद प्रचार एवं जन सम्पर्क अभियान

वेदों में श्रावणी पर्व का बहुत महत्व है। इसलिये पिछले कई वर्षों की भान्ति इस बार भी आर्य समाज नवांशहर में रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक वेद प्रचार एवं जन सम्पर्क अभियान का आयोजन श्री प्रेम भारद्वाज जी प्रधान आर्य समाज के नेतृत्व में किया जा रहा है। यह कार्यक्रम 26 अगस्त रविवार का प्रातः 8.30 बजे श्री तरसेम लाल जी मैनेजर यूनियन बैंक आफ इंडिया के निवास स्थान गली नम्बर 1, नजदीक प्रेम दी आटा चक्की, कुलाम रोड नवांशहर से प्रारम्भ होगा। 27 अगस्त 2018 सोमवार को कार्यक्रम प्रातः 8.30 बजे श्री बलदेव सैनी जी के निवास स्थान सामने आरा लकड़ी, बरनाला रोड नवांशहर में होगा। 28 अगस्त 2018 मंगलवार को कार्यक्रम प्रात 8.30 बजे श्री गुरचरण अरोडा जी के निवास स्थान पैरिस होटल के सामने, पेट्रोल पम्प वाली गली, चण्डीगढ़ रोड नवांशहर में होगा। इसी तरह 29 अगस्त 2018 दिन बुधवार को श्री दिनेश औहरी जी दुकान नम्बर 36, न्यू अनाज मंडी करियाम रोड नवांशहर में होगा। 30 अगस्त 2018 दिन वीरवार को सायं 5.00 बजे श्री बलिहार बैंस रिटा. प्रिंसीपल गली नजदीक शीना पाईप स्टोर राहों रोड नवांशहर में होगा। इसी तरह 31 अगस्त 2018 शुक्रवार का कार्यक्रम सायं 5.00 बजे डा. कमल जी एम.सी. नजदीक रेलवे फाटक करियाम रोड नवांशहर में होगा। एक सितम्बर, 2018 शनिवार को प्रातः 10:30 बजे डी.ए.एन. कालेज आफ एजुकेशन राहों रोड नवांशहर में होगा। 2 सितम्बर 2018 दिन रविवार को प्रातः 9.00 बजे श्री प्रवेश चोपड़ा जी नजदीक गीता भवन मंदिर, गीता भवन रोड नवांशहर में होगा और अन्त में 3 सितम्बर 2018 दिन सोमवार को श्री अविनाश चन्द्र नैय्यर, नैय्यर कालोनी गली नजदीक डा. मांगेवालिया कुलाम रोड नवांशहर में होगा। इन उपरोक्त कार्यक्रमों में यज्ञ में ऋग्वेद शतकम् के मंत्रों की आहुतियां प्रदान की जाएगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री अमित शास्त्री जी पुरोहित आर्य समाज होंगे। इसलिये सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि उपरोक्त कार्यक्रमों में पधार का धर्म लाभ उठावें।

-अरविन्द नारद प्रचार मंत्री आर्य समाज नवांशहर

72वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर धूरी के तत्वावधान में सभी शिक्षण संस्थाओं ने आर्य कालेज के परिसर में उपस्थित होकर राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर 72वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया। मुख्य अतिथि धूरी शहर के माननीय, विधायक श्रीमान दलबीर सिंह गोलड़ी व समाज सेवी महाशा प्रतिज्ञापाल जी ने ध्वजारोहण किया, उसके बाद आर्य सी० सै० स्कूल के छात्राओं ने राष्ट्रीय गीत गाकर देश व ध्वज का स्वागत किया। यह स्वतंत्रता दिवस आर्य समाज के प्रधान अशोक जिन्दल की अध्यक्षता में मनाया गया। आर्य स्कूल, यश चौधरी आर्य माडल स्कूल, आर्य कालेज, व महाशा चेतराम आर्य मैमोरियल टेक्निकल इंस्टीच्यूट धूरी, के छात्र-छात्राओं के द्वारा देश भक्ति पर अधारित संस्कृति कार्यक्रम व पंजाब के लोक नृत्य प्रस्तुत किये गये।

मंच का संचालन आर्य समाज के महामंत्री सोम प्रकाश आर्य ने बहुत ही सरल शब्दों से किया, तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी छात्र-छात्राओं को ईनाम दिया गया। इस स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर आर्य समाज के सभी शिक्षण संस्थाओं के अध्यापक, अध्यापिका व छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। आर्य समाज के सभी स्कूल व कालेज के प्रिंसिपल श्रीमति नीरू जिन्दल, मोनिका वाटस, निशा मितल, ऋचा गोयल तथा आर्य समाज के सभी सदस्यगण व अधिकारीगण उपस्थित हुए। वासदेव आर्य, राजेश आर्य, पवन कुमार गर्ग, सुशील पाठक, आर्य समाज के कोषाध्यक्ष विकास शर्मा, विकास जिन्दल, विवेक जिन्दल, अशोक गुप्ता, डा० सुरजीत सरीन, विजय आर्य, विजय कुमार, रामपाल आर्य, डॉ. राम लाल आर्य, रमेश आर्य, स्त्री आर्य समाज से कृष्णा आर्या, कुसुम गर्ग, शशी सरीन, दर्शना देवी, श्रीमति उर्मिला आर्या, उपस्थित हुए। इसके बाद शास्त्री जी ने शान्ति पाठ किया और भारत माता के जय घोष के नारे के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

इति ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

-महामंत्री सोम प्रकाश आर्य, आर्य समाज, धूरी

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

प्र.1–रामायण के रचयिता का नाम बताओ?
उत्तर– महर्षि वाल्मीकि।

प्र.2–राजा दशरथ के पिता का नाम बताओ?
उत्तर–अज।

प्र.3–राजा दशरथ के कुलगुरू का नाम क्या था?
उत्तर–वशिष्ठ।

प्र.4–राजा दशरथ के कितने पुत्र थे?
उत्तर–चार।

प्र.5–राजा दशरथ के चार पुत्रों में से कौन दो सगे भाई थे?
उत्तर–लक्ष्मण व शत्रुघ्न

प्र.6–राजा दशरथ ने पुत्र प्राप्ति के लिए कौन सा यज्ञ किया था?
उत्तर–पुत्रेष्टि यज्ञ।

प्र.7– राजा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ किसने करवाया था?
उत्तर–श्रृंगी ऋषि ने।

प्र.8–महाराजा दशरथ की कितनी रानियां थी?
उत्तर–तीन रानियां थी।

प्र.9–वैदेही जानकी किसे कहा जाता है?
उत्तर–सीता को।

प्र.10–सौमित्र के नाम से किसे जाना जाता है?
उत्तर–लक्ष्मण।

प्र.11–कौन से ऋषि अपना यज्ञ पूर्ण करने के लिए राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले गए थे?
उत्तर–विश्वामित्र ऋषि।

प्र.12–वाल्मीकि रामायण में कुल कितने श्लोक हैं?
उत्तर–24000 श्लोक।

प्र.13–लक्ष्मण की पत्नी का क्या नाम था?
उत्तर–उर्मिला।

प्र.14–भरत की पत्नी का क्या नाम था?
उत्तर–माण्डवी।

प्र.15–शत्रुघ्न की पत्नी का क्या नाम था?
उत्तर–श्रुतकीर्ति।

प्र.16–रावण के पिता का नाम क्या था?
उत्तर–विश्वश्रवा।

प्र.17–रावण की माता का नाम क्या था?
उत्तर–कैकसी।

प्र.18–महाराजा दशरथ के पुत्रों का नामकरण किसने किया था?
उत्तर–महर्षि वशिष्ठ जी ने।

प्र.19–राम द्वारा सीता स्वयंवर के समय शिव धनुष तोड़ने पर कौन से ऋषि नाराज हुए थे?
उत्तर–परशुराम।

प्र.20–श्रीराम के वनवास के समय भरत ने अपना निवास कहां बनाया?
उत्तर–नन्दीग्राम।

प्र.21–सुग्रीव व श्रीराम की प्रथम भेंट कहां हुई?
उत्तर–ऋष्यमूक पर्वत पर।

प्र.22–हनुमान को समुद्र पार करने के लिए उनके बल का ज्ञान किसने कराया?
उत्तर–जाम्बवन्त ने।

प्र.23–सीताहरण रामायण के किस काण्ड़ में आता है?
उत्तर–अरण्य काण्ड़ में।

प्र.24–रामायण के अध्यायों को क्या कहते हैं?
उत्तर–काण्ड।

प्र.25–सुग्रीव के भाई का क्या नाम था?
उत्तर– बालि।

प्र.26–रामायण में कितने काण्ड हैं?
उत्तर–सात।

प्र.28–लव कुश का जन्म किस ऋषि के आश्रम में हुआ था?
उत्तर–महर्षि वाल्मीकि।

प्र.29–लंका की वह महान् पतिव्रता कौन है जिसे सती कहा गया?
उत्तर–सुलोचना।

प्र.30–रावण ने सीता का हरणकर लंका में किस स्थान पर रखा था?
उत्तर–अशोक वाटिका में।

प्र.31–रावण की लंका किस पर्वत पर स्थित थी?
उत्तर– त्रिकूट पर्वत।

प्र.32–लक्ष्मण को राम के साथ वन जाने के लिए किसने प्रेरित किया था?
उत्तर–माता सुमित्रा ने।

प्र.33–राम किस राजवंश से थे?
उत्तर–इक्ष्वाकु।

प्र.34–श्रीराम और लक्ष्मण ने दण्ड़क वन में रावण के किन दो शक्तिशाली अनुचरों का वध कर दिया था?
उत्तर–खर तथा दूषण।

प्र.35–वनवास से लौटकर राम ने प्रथम प्रणाम किसे किया?
उत्तर–कैकेयी को।

प्र.36–अयोध्या किस जनपद की राजधानी थी?
उत्तर–कौशल

प्र.37–अयोध्या शब्द का अर्थ बताओ?
उत्तर–जिसे जीता न जा सके।

प्र.38– मुनि भारद्वाज ने वनवास के समय राम को कहां बसने का परामर्श दिया?
उत्तर– चित्रकूट पर्वत।

प्र.39–चित्रकूट के बाद राम किस वन में गए?
उत्तर– दण्ड़कारण्य वन।

प्र.40–विश्वामित्र किन राक्षसों से अपने यज्ञ की रक्षा हेतु राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाने को आए थे?
उत्तर–मारीच और सुबाहु।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।